॥ श्री ॥

मूलाचार

MULAACHAARA

आ. वट्टकेर · २–३वीं शती · अभिलेख ९/९०

आ. वट्टकेर

संक्षिप्त परिचय

आचार्य वट्टकेर कृत — दिगम्बर मुनि के मूलगुण, समाचार, पिण्डशुद्धि आदि का विस्तृत प्राकृत ग्रन्थ।

मुनि-आचार का प्रधान आकर होने से इसे दिगम्बर परम्परा का 'आचारांग' भी कहा जाता है।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

मूलाचार — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ९ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. वट्टकेर; रचना-काल २–३वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ६६) के अनुसार इनका समय १२७–१७९ है। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "मूलाचार" उल्लिखित है। समकालीन ग्रन्थों में षट्खण्डागम, कसायपाहुड, समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, नियमसार परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

षट्खण्डागम | कसायपाहुड | समयसार | प्रवचनसार | पंचास्तिकाय | नियमसार

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ | जैनकोश ↗ | Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ९ — मूल छायाचित्र

← बारस अणुवेक्खा

तिलोयपण्णत्ति →